

— व्यति med. *überreffen*: व्यतिजिग्ये समुद्रो ऽपि न धैर्यं तस्य गच्छतः BHATT. 8, 4.

— अधि *hinzugewinnen*: गा अधि जयास्ति गोषु RV. 8, 35, 2. den *Steg* davontragen über: सपत्न्याश्चाधिजीयास्म BHATT. 19, 2; nach den Scholl. von ज्या.

— अनु *Etwas sich unterwerfen, sich unterthan machen*: कौशल्या ऽन्वजयन्महम् MBH. 12, 3124. — desid. *sich unterthan zu machen sich bestreben*: न जीयते नानुजिगीषते ऽन्यान् MBH. 5, 1274.

— अप *abhalten, abwenden*: येन यजमानः पुनर्मृत्युमपजयति ÇAT. Br. 10, 1, 4, 14. अप पुनर्मृत्युं जयति 6, 1, 4, 14, 4, 3, 6. सर्पा अप मृत्युमजयन् PANKAV. Br. 25, 15. ऋषीणामधिवज्रमपाजयत् KĀT. 19, 12 in Ind. St. 3, 478. अप भित्ता जयत्यप ज्ञातीनामशनायाम् ÇAT. Br. 11, 3, 3, 7. तेतो विष्टे देवा अमृतत्वमपाजयन् von da aus wandten die Götter das Unsterblichwerden (der Asura) ab 3, 6, 1, 28, 29. — Vgl. अनपजय्यम्.

— अभि *gewinnen, ersiegen, erwerben*: लोकान् AV. 12, 3, 15. 9, 5, 6. TS. 5, 2, 1, 1. ये यज्वनामभिजिताः स्वर्गाः AV. 12, 3, 6. ÇAT. Br. 12, 8, 2, 13, 2, 4, 1. TS. 5, 4, 4, 1. अत्रायम् ÇAT. Br. 4, 6, 9, 1. 11, 2, 3, 1. TBr. 3, 1, 2, 6. KĀT. 34, 5 in Ind. St. 3, 477. Mit dopp. acc.: अभिजिता वै देवा असुरानि-मो लोकानभ्यजयन् PANKAV. Br. 20, 8. — ते चान्द्रमसमेव लोकमभिजयन्ते प्राचनोप. 1, 9; hier ist wohl अभिजायते (s. u. जन्) zu lesen. — desid. *gewinnen* —, *überwinden wollen, angreifen*: वेदश्रुतिभिराष्यनिर्धानभिजिगीषति MBH. 12, 8465. ÇĀK. Ça. 14, 42, 16. युक्तमेनस्य नृपतेः परानभिजिगीषतः Suça. 1, 122, 3. — Vgl. अभिजय, अभिजित् fgg.

— अव 1) *abgewinnen, abnehmen*: शरीर्विधस्य तौष्टीरानवजित्य च तद्धनम् MBH. 1, 7765. M. 11, 80. पुष्पकं नाम विमानम् — वीर्यदवजितम् R. 3, 54, 6. कृतां कृत्वावजयत् MBH. 4, 1537. R. 5, 71, 13. 6, 9, 30. — 2) *abhalten, abwenden*: गृहस्थश्चावजेष्यामि मृत्युम् MBH. 13, 124. — 3) *besiegen*: अवजित्य सुशर्माणम् MBH. 4, 1118. 6, 3757. — desid. *abgewinnen* —, *wiedergewinnen wollen*: राष्ट्रमवजिगीषन् ÇĀK. Ça. 14, 50, 8. — Vgl. अवजय.

— आ *gewinnen, erwerben*: उभा क्षपावजयन्त्याति पृतसु RV. 2, 27, 15. AIT. Br. 2, 36. एतेन वै मित्रावरुणाविमो लोकानाजयताम् PANKAV. Br. 23, 10. — desid.: जिगीषमाणमिष आ पदे गोः RV. 1, 163, 7.

— उद् 1) *erwerben, gewinnen, unterwerfen*: प्राणम् मनुष्यान् VS. 9, 31. यजमान एव वाज्जुस्त्वयति TBr. 1, 3, 3. ÇAT. Br. 2, 4, 3, 4, 5. 5, 1, 4, 3. fgg. 3, 2. fgg. 5, 25. — 2) *siegreich sein*: पूर्णा पश्चादुत पूर्णा परस्ताड-न्मध्यतः पौर्णमासी जिगाय AV. 7, 80, 1. P. 8, 1, 35. Sch. (s. u. अनूद्). — caus. *siegen machen*: आर्यं वर्णमुज्जापयत्यात्मानमेवोज्जापयति KĀT. 34, 5 in Ind. St. 3, 477. Mit dopp. acc. Jmd *Etwas gewinnen lassen*: स्वर्गमेवेन तल्लोकमुज्जापयति PANKAV. Br. 18, 7. — desid. उज्जिगीषन् ÇĀK. Ça. 14, 44, 1. — Vgl. उज्जयन fgg., उज्जिति, उज्जेष fgg.

— अनूद् nach Jmd (acc.) *siegreich sein*: अग्नीषोमयोहस्तिमनूजेषम् VS. 2, 15. KĀT. Ça. 3, 5, 22. अग्निर्हि पूर्वमुदजयत्तमिन्द्रो ऽनूदजयत् red. Citat beim Sch. zu P. 8, 1, 35.

— निम् 1) *gewinnen, ersiegen, erwerben, sich unterwerfen, erobern*: इन्द्रलोकम् MBH. 1, 7658. 5, 7084. द्रौपदीम् — निर्जितामर्जुनेन 1, 152. दह्या निर्जिता वृद्धिम् (Zinsen) M. 8, 154. प्रीतिं वीर्यनिर्जिताम् R. 1, 69, 9. सर्वा-मिमो पृथिवीं निर्जिगाय MBH. 1, 3685. 2, 494. 3, 12272. 15253. BHATT. 7,

III. Theil.

94. — 2) *besiegen, überwinden*: पौरवं युधि निर्जित्य MBH. 2, 1025. 3, 2447. 5, 7085. LA. 48, 7. R. 3, 26, 24. 54, 8. 5, 25, 7. RA. 3, 51. VARAN. B. 8. S. 12, 19. Bha. P. 1, 14, 37. BHATT. 2, 52. द्यूते स निर्जितः MBH. 3, 2589. 887. विप्रं निर्जित्य वादतः JĀG. 3, 292. भावनिर्जितचेतसा Bha. P. 1, 6, 17. निर्जितेन्द्रियग्राम AK. 2, 7, 43. दिष्ट्या मे निर्जिता विष्ट्याः R. 1, 69, 11. (शापः) मम च व्यवसायेन तपसा चैव निर्जितः MBH. 3, 2970. सौन्दर्यनिर्जितरतिदि-जराजकाति *besiegt so v. a. übertraffen* KĀURAP. 30, 32. — Vgl. निर्जय, निर्जिति.

— अभिनिस् *besiegen, überwinden*: पाण्डवेनाभिनिर्जितः MBH. 14, 2220. — परिनिस् *dass.: एकेन तेन वीरिणा षड्रथाः परिनिर्जिताः* MBH. 4, 2251. R. 5, 36, 88.

— प्रतिनिस् *aufheben, vernichten*: स समयो धर्मेण प्रतिनिर्जितः R. 2, 26, 22.

— विनिस् 1) *gewinnen, ersiegen, erobern*: के लोका वै विनिर्जिताः MBH. 3, 1883. स विनिर्जित्य संग्रामे ह्निमवत्सम् 2, 1037. युद्धेनास्मि विनि-र्जिता R. 3, 59, 5. 5, 59, 3. 6, 100, 18. — 2) *besiegen, überwinden*: तौष्ट्य स-र्वान्विनिर्जित्य MBH. 3, 466. 5, 6085. Bha. P. 1, 15, 20. 2, 12, 31. (ब्राह्म-णम्) विवादे वा विनिर्जित्य M. 11, 205. — Vgl. विनिर्जय.

— परा med. P. 1, 3, 19. Vop. 23, 1. 1) *Etwas (acc.) verlieren, um Et- was gebracht werden*: अहमिन्द्रो न परा जिग्य इहर्नम् RV. 10, 48, 5. परा भागमोषधीनां जयताम् 87, 18. असुरा सर्वं पराजयन्त ÇAT. Br. 1, 5, 4, 11. act.: बहु वितं पराजिषीः आचक्ष्व वितं कौत्सेय यदि ते ऽस्त्यपराजितम् MBH. 2, 2141. 2167. 2204. यदात्मानं पराजयेः (so ist mit West. zu lesen) 2170. — 2) *besiegt werden, unterliegen*: उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे RV. 6, 69, 8. AV. 4, 22, 5. 6, 98, 1. परा जिग्यानाः TS. 2, 3, 2, 1. ÇAT. Br. 1, 5, 4, 6. 4, 6. KAUC. 13. न च सेना पराजय्यात् MBH. 4, 1604. पराजित RV. 10, 84, 7. AV. 3, 1, 6. 5, 21, 9; vgl. u. 4. — 3) *einer Sache unterliegen*; *Etwas nicht über- winden* —, *ertragen können*; mit dem abl. P. 1, 4, 26. अथयनात्पराज-यते Sch. तां पराजयमानाम् — प्रीतेः (रावणस्य) BHATT. 8, 71. पराजितः दुःखात् Vop. 5, 20. — 4) *besiegen, überwinden*: तस्माद्देवाः पराजिष्ट माम् MBH. 1, 6378. पराजयिष्ये कैरव्यं कवचेनापि रक्षितम् 7, 3860. नैते युधि पराजिते शक्या देवगौरपि 2, 1717. पराजित्य च वासुकिम् R. 3, 36, 13. MĀLAV. 90. पराजयिषत (sic) यवनाः DAÇAK. 149, 2. यं पराजयसे मृषा (im Process) JĀG. 2, 75. खं पराजयमानो ऽसावुन्नत्या (असौ sc. अग्निः) BHATT. 8, 9. act.: यस्त्वा युद्धे पराजयेत् MBH. 7, 3004. 1, 2303. 14, 2422. ततो ऽग्निर्दि-तितान् — पराजयामास HARIV. 13946. कुत्सीसुतमजवत्यो पराजिषीत् MBH. 3, 223. तान्गल्हे — पराजयत् 2, 2171. पराजित *bestegt, überwunden, über- wältigt* (vgl. u. 2). AK. 2, 8, 2, 80. H. 805. MBH. 14, 2422. R. 3, 36, 53. KUMĀRAS. 1, 41. Bha. P. 1, 14, 42. 8, 11, 48. DRV. 2, 2. im Spiele MBH. 2, 2163. N. 26, 18. PANKAT. I, 431. im Process M. 8, 58. JĀG. 2, 306. गावो वर्षपराजिताः HARIV. 3917. पुत्रशोक° R. 2, 65, 16. — Vgl. अपराजित, आ-त्मपराजित, पराजय.

— परि *besiegen, überwinden*: सर्वात्मना परिजेतुं वयं चेन्न शक्नुमो धृत-राष्ट्रस्य पुत्रम् MBH. 5, 712. — Vgl. परिजय.

— प्र *gewinnen, ersiegen, besiegen*: संवत्सरे त्रेधा विभज्य प्रजयति ÇAT. Br. 2, 6, 3, 1. 1, 5, 3, 8. इमो लोकान् 3, 4, 4. प्रजयं प्रतिषेधम् ÇĀK. Ça. 18, 21, 8. प्रामू जय AV. 6, 126, 8. तान्प्रजयाम्यय MBH. 7, 70. — Vgl. प्रजय.

— प्रति *besiegen*: धातुव्यान् TS. 5, 4, 4, 4. im Spiele: अमायिनं मायया